JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन

पूजा रानी[1] – डॉ. शैल ढाका[2]
शोधार्थी[1] एसोसिएट प्रोफेसर एवं शोध निर्देशिका[2]
स्कूल ऑफ़ एजुकेशन
शोभित इंस्टिट्यूट ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी
डीम्ड – टू – बी यूनिवर्सिटी, मोदीपुरम; मेरठ इंडिया

शोधसार –

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षक प्रभावशीलता और संगठनात्मक वातावरण से संबंधित चरों का अध्ययन करना है। विश्लेषण में शिक्षक प्रभावशीलता में लिंग आधारित अंतर, शिक्षक प्रभावशीलता में ग्रामीण – शहरी असमानताएं, संगठनात्मक वातावरण में लिंग – आधारित असमानताएं और संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध शामिल है। निष्कर्ष से पता चलता है कि शिक्षक प्रभावशीलता एवं संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। इसी प्रकार, ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। हालांकि, ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच संगठनात्मक वातावरण में एक महत्वपूर्ण अंतर देखा गया, शहरी शिक्षकों ने अधिक अनुकूल संगठनात्मक वातावरण की सूचना दी। इसके अलावा, संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच एक बहुत कमजोर नकारात्मक सहसंबंध की पहचान की गई, संक्षेप में, यह शोध अशक्त परिकल्पनाओं की स्वीकृति का समर्थन करता है, यह सुझाव देता है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के संदर्भ में किए गए अध्ययन चरों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर या संबंध नहीं है।

कुंजी शब्दः उच्च शिक्षण संस्थान, संगठनात्मक वातावरण, शिक्षक प्रभावशीलता।

प्रस्तावना –

शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला – कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरंतर विकास करते हैं। शिक्षा के द्वारा छात्रों का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं उनका सर्वांगीण विकास करके उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन किया जाता है ताकि उन्हें उत्तम नागरिक बनाकर समाज एवं राष्ट्र की उन्नति की जा सके। विद्यालय शिक्षा प्राप्त करने का औपचारिक स्थान होता है। विद्यार्थियों की उपलब्धि, शैक्षिक उपलब्धि, अभिवृत्ति एवं शिक्षकों के सम्पूर्ण शिक्षण – कार्य व विद्यालय की समस्त गतिविधियों को प्रभावित करने में संस्थागत वातावरण की अहम् भूमिका होती है। किसी विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण से अभिप्राय ऐसे वातावरण से होता है जहाँ पर शिक्षण – अधिगम की प्रक्रिया स्वतः एवं स्वाभाविक ढंग से पूर्ण होती है। यदि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को उचित वातावरण नही मिलता है तो विद्यार्थियों को उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नही होती है तथा शिक्षक शिक्षण के लिए उचित वातावरण का निर्माण करने में सफल नही हो पाते है। जिसके कारण शिक्षण – प्रक्रिया प्रभावित होती है एवं प्रभावशाली शिक्षण – कार्य भी नही हो पाता है। अतः विद्यार्थियों के अधिगम को अत्यन्त सरल एवं सुगम बनाने में विद्यालय का वातारण अत्यन्त प्रभावशाली साधन होता है क्योंकि किसी भी संस्था का वातावरण जितना श्रेष्ठ एवं उच्च होगा। वह विषयगत शिक्षण सुधार में उतना ही अधिक उपयोगी होगा। शिक्षण की संपूर्ण प्रक्रिया एक शिक्षक पर आधारित होती है। शिक्षक ही शिक्षण के लिए एक उचित वातावरण का निर्माण करता है। शिक्षण संस्थानों का संस्थागत वातावरण शिक्षण प्रक्रिया का मुख्य आधार होता है। शिक्षकों का प्रभावशाली शिक्षण संस्था के द्वारा प्रभावित होता है इसीलिए शिक्षकों का यह कर्तव्य है कि वे शिक्षण संस्थान में ऐसे वातावरण का निर्माण करे जिसमें प्रभावशाली शिक्षण एवं अधिगम हो सके। संस्थागत वातावरण शिक्षकों के शिक्षण कार्य से लेकर निष्पादन तक को प्रभावित करता है इसलिए शिक्षकों को अपने सहयोगियों, प्रबंधकों, कर्मचारियों एवं छात्रों तक के साथ प्रेमपूर्ण, विश्वासनीय और सहयोगपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। संगठनात्मक वातावरण में वे सभी आवश्यक संसाधन निहित होते है जो विद्यार्थियों व शिक्षकों के लिए अधिगम तथा शिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करते है।

संगठनात्मक वातावरण से अभिप्राय शिक्षण संस्थाओं की उन समस्त परिस्थितियों, मानवीय व भौतिक दोनों प्रकार के संसाधनों तथा उनकी उन समस्त समन्वित एवं पारस्परिक अन्तक्रियाओं से होता है जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव शिक्षण संस्थाओं के द्वारा किये जाने वाले कार्यो एवं उनके कर्तव्यों पर पड़ता है। इस प्रकार निष्पादन तथा संगठनात्मक वातावरण में सकारात्मक सह – सम्बन्ध पाया जाता है अर्थात् जितना उत्तम किसी संस्था का वातावरण होगा उतनी ही अच्छी उस संस्था की कार्य शैली होती है।

संस्थागत वातावरण से तात्पर्य है " संस्था के कक्षा – कमरे, भवन, आस–पडोस, क्रीडा स्थल, बैठने का प्रबंध, वायु एवं प्रकाश, पेयजल, एकल कार्यक्रम में समय सारणी तथा कार्य करने की अनुकूल परिस्थितियों से है। " शिक्षक प्रभावशीलता हम सबके लिए कोई नया प्रत्यय नहीं है, अक्सर हम यह देखते हैं और सुनते हैं कि किसी शिक्षक का शिक्षण कार्य शिक्षकों के समूह में सबसे अधिक प्रभावशाली है इसका अर्थ है कि उस शिक्षक ने अपने दायित्व और शिक्षण कार्य में महत्वपूर्ण दक्षता प्राप्त की है जैसे की कक्षा का वातावरण, कक्षा – कक्षा में जाने से पूर्व उसकी तैयारी, विषय – वस्तु का ज्ञान, विषय – वस्तु का प्रस्तुतीकरण, मूल्यांकन, उसका व्यक्तित्व, शिक्षक की विशेषताएं और उसके अंतर वैयक्तिक संबंध आदि। शिक्षण प्रभावशीलता इस तरह भी ध्यान आकर्षित करती है कि शिक्षक के शिक्षण कार्य का प्रभाव छात्रों पर कितना प्रभावशाली है शिक्षक कक्षा में पाठ्यवस्तु के ज्ञान देने के लिए किन – किन विधियों एवं तकनीकियों का प्रयोग करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा –

सिंह, प्रीति, अग्रवाल, पदमा एवं सक्सेना, सुमन लता (2022) इन्होंने अपना शोध कार्य " उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन " विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। परिणामों के विश्लेषण के आधार पर शोधकर्त्ता ने पाया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

कुमार, सुमित (2021) शोधार्थी ने अपना शोध कार्य " कुरुक्षेत्र जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षक प्रभावशीलता ज्ञात करना " विषय पर पूर्ण किया। प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, प्रमाप विचलन व टी. परीक्षण सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर शोधार्थी ने निष्कर्ष में पाया कि शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में लिंग व वैवाहिक स्थिति के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया जबकि विषय, स्थान व कार्य अनुभव के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

जागृति, विश्वकर्मा एवं कुमार, दिनेश मौर्य (2021) इन्होंने अपना शोध कार्य " सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि पर अध्ययन " विषय पर पूर्ण किया। इनकी शोध का प्रमुख उद्देश्य सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता एवं कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना था। शोधकर्त्ता ने अपने शोध के निष्कर्ष में पाया कि संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का केंद्र शिक्षक होता है। शिक्षक ही अपने प्रभावशाली शिक्षण द्वारा महान व्यक्तित्व को विकसित करता है जो केवल समाज के किसी एक क्षेत्र को ही नहीं अपितु जीवन के सभी क्षेत्रों के लिए सुसभ्य नागरिकों को तैयार करता है इसीलिए शिक्षक को स्वयं को सकारात्मक भाव के साथ रहना होगा शिक्षक प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि उन शिक्षण संस्थानों में सबसे अच्छी होती है जहां अध्यापकों की सेवा शर्तें एवं उनका सम्मान होता है सरकारी तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता गैर सरकारी शिक्षकों के से उच्च स्तर की थी एवं पुरुष एवं महिला शिक्षकों में महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता उच्च स्तर की पाई गई।

बलखंडे, दीपा मिलिंद (2020) में अपना शोध " संगठनात्मक वातावरण और कार्य प्रेरणा का सहसंबंध अभ्यास " प्रस्तुत किया। शोध का उद्देश्य संगठनात्मक जलवायु और कार्य प्रेरणा के अध्ययन की जांच करना था। यह निष्कर्ष निकला कि संगठनात्मक वातावरण और कार्य प्रेरणा में धनात्मक उच्च स्तरीय सहसंबंध होता है अर्थात संगठनात्मक वातावरण यदि अनुकूल और अच्छा है तो कर्मचारियों में कार्य प्रेरणा दिखाई देती है।

अग्रवाल, निधि, सत्तार, अब्दुल व जैन, मनीषा (2020) इन्होंने अपना शोध कार्य " उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में संस्थागत वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन " विषय पर पूर्ण किया। शोधकर्ता ने शोध के निष्कर्ष में पाया कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं विद्यालय वातावरण के मध्य धनात्मक संबंध पाया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का औचित्य –

यह अध्ययन उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षक प्रभावशीलता और संगठनात्मक वातावरण के महत्वपूर्ण पहलुओं को संबोधित करके शैक्षिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण प्रासंगिकता रखता है। शिक्षकों के प्रदर्शन और समग्र कार्य स्थल वातावरण को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना स्वयं शैक्षिक नीति निर्माताओं, प्रशंसकों और शिक्षकों के लिए आवश्यक है। शिक्षक प्रभावशीलता और संगठनात्मक वातावरण में लिंग – आधारित अंतर की जांच शैक्षिक क्षेत्र के भीतर लिंग समानता को बढ़ावा देने के चल रहे प्रयासों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच असमानताओं की खोज शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों और संसाधनों की विविधता को स्वीकार करती है, विभिन्न संदर्भ में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए लक्षित हस्तक्षेपों का मार्गदर्शन करती है। इसके अलावा, अध्ययन शिक्षा में डाटा – संचालित निर्णय लेने के महत्व को रेखांकित करता है, नीतियों और प्रथाओं को आकार देने में अनुभवजन्य साक्ष्य के मूल पर जोर देता है। इन प्रभावशाली कारकों पर प्रकाश डालकर और पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देकर, इस शोध में सकारात्मक बदलाव लाने और उच्च शिक्षण संस्थानों के भीतर शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए शैक्षिक अनुभव को बढ़ावा देने की क्षमता है।

शोध समस्या का कथन –

उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन

शोध अध्ययन के उद्देश्य –

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया गया है –

1 – उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

2 – उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

3 – उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करना।

4 – उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन करना।

5 – उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंधों का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं –

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है –

1 – उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2 – उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3 – उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

4 – उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

5 – उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नही है।

शोध अध्ययन की विधि –

प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध की जनसंख्या और न्यादर्श –

शोध अध्ययन के लिए जनसंख्या में भारत के उत्तर प्रदेश के जिला बागपत के उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षकों को शामिल किया गया है। जिसमें न्यादर्श हेतु स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ने वाले उच्च शिक्षण संस्थानों के 100 शिक्षकों को न्यादर्श हेतु शामिल किया गया है।

शोध उपकरण –

इस शोध अध्ययन हेतु डॉ. मोतीलाल शर्मा द्वारा निर्मित शालेय संगठनात्मक वातावरण प्रश्नावली एवं डॉ. शालूपुरी व प्रो. एस. सी. गाखर द्वारा निर्मित शिक्षक प्रभावशीलता प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियां –

प्रदत्तों के विश्लेषण करने हेतु माध्य, मानक विचलन, टी – टेस्ट और पियर्सन संबंध गुणांक का उपयोग किया गया।

विश्लेषण तथा व्याख्या –

उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले 100 शिक्षकों के लिंग और स्थानीयता के आधार पर व उप – नमूनों के आधार पर डाटा एकत्रित किया गया था। समूह की तुलना उनके संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता को अलग से मापने के लिए की गई थी। इन समूहों के माध्य और मानक विचलन की गणना की गई। क्रांतिक अनुपात की गणना करके माध्य अंकों के बीच अंतर का महत्व पता लगाया गया। संबंध गुणांक की गणना करके संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध देखा गया। महत्व और सहसंबंध गुणांक के परीक्षण के डाटा और परिणाम निम्नलिखित दिए गए हैं –

तालिका 1

उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष और महिला शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के औसत अंकों के बीच अंतर

चर	लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी – मूल्य	सार्थकता का स्तर
शिक्षक प्रभावशीलता	पुरुष	50	273.86	32.69	0.26	सार्थक नहीं
	महिला	50	275.52	29.00		

तालिका 1 से यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षण संस्थाओं के पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच औसत अंतर क्रमशः 273.86 और 275.52 है। दोनों समूह के बीच महत्वपूर्ण अनुपात 0.26 है जो महत्व के दोनों स्तरों पर तालिका मूल्य से कम है जिसका अर्थ है कि शिक्षक प्रभावशीलता पर दोनों समूह के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। यह भी पाया गया कि महिला शिक्षकों का औसत स्कोर पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक है, इसीलिए यह भी व्याख्या की जाती है कि महिला शिक्षकों में उनके समकक्षों की तुलना में अधिक शिक्षक प्रभावशीलता होती है। इसीलिए तैयार की गई शून्य परिकल्पना, " उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षक प्रभावशीलता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।" को स्वीकार कर लिया है।

तालिका 2

उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के औसत अंकों के बीच अंतर

चर	क्षेत्र	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी – मूल्य	सार्थकता का स्तर
शिक्षक प्रभावशीलता	ग्रामीण	50	270.08	26.17	0.21	सार्थक नहीं
	शहरी	50	271.38	31.33		

तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच औसत अंतर क्रमशः 270.08 और 271.38 है। दोनों समूह के बीच महत्वपूर्ण अनुपात 0.21 है जो महत्व के दोनों स्तरों पर तालिका मान से कम है जिसका अर्थ है कि दोनों समूह के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। शिक्षक प्रभावशीलता यह भी पाया गया कि शहरी शिक्षकों का औसत स्कोर ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में अधिक है, इसीलिए यह भी व्याख्या की जाती है कि शहरी शिक्षकों में उनके समकक्षों की तुलना में अधिक शिक्षक प्रभावशीलता होती है। इसीलिए तैयार की गई शून्य परिकल्पना, " उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।" को स्वीकार कर लिया गया है।

तालिका 3

उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष और महिला शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण के औसत स्कोर के बीच अंतर

चर	लिंग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी – मूल्य	सार्थकता का स्तर
संगठनात्मक वातावरण	पुरुष	50	161.36	17.22	0.45	सार्थक नहीं
	महिला	50	164.10	19.54		

तालिका 3 से यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच औसत अंतर क्रमशः 161.36 और 164.10 है। दोनों समूहों के बीच महत्वपूर्ण अनुपात 0.45 है जो महत्व के दोनों स्तरों पर तालिका मूल्य से कम है जिसका अर्थ है कि संगठनात्मक वातावरण पर दोनों समूह के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। यह भी पाया गया कि महिला शिक्षकों का औसत स्कोर पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक है, इसीलिए यह भी व्याख्या की जाती है कि महिला शिक्षक अपने समकक्षों की तुलना में अच्छे संगठनात्मक वातावरण का अनुभव करती है। इसीलिए तैयार की गई शून्य परिकल्पना, " उच्च शिक्षण संस्थानों के पुरुष और महिला शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। " को स्वीकार कर लिया गया है।

तालिका 4

उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण के औसत स्कोर के बीच अंतर

चर	क्षेत्र	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी – मूल्य	सार्थकता का स्तर
संगठनात्मक वातावरण	ग्रामीण	50	153.82	16.87	12.18	सार्थक
	शहरी	50	171.20	12.18		

तालिका 4 से यह स्पष्ट है कि उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच औसत अंतर क्रमशः 153 .82 और 171.20 है। दोनों समूहों के बीच महत्वपूर्ण अनुपात 3.70 है जो महत्व के दोनों स्तरों पर तालिका मूल्य से अधिक है जिसका अर्थ है कि संगठनात्मक वातावरण पर दोनों समूह के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। यह भी पाया गया कि शहरी शिक्षकों का औसत स्कोर ग्रामीण शिक्षकों की तुलना में काफी अधिक है, इसीलिए यह भी व्याख्या की जाती है कि शहरी शिक्षक अपने समकक्षों की तुलना में अच्छे संगठनात्मक वातावरण का अनुभव करते हैं। इसीलिए तैयार की गई शून्य परिकल्पना " उच्च शिक्षण संस्थानों के ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के संगठनात्मक वातावरण के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।" को अस्वीकार कर दिया गया है।

तालिका 5

उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के औसत स्कोर के बीच अंतर

चर	शिक्षकों की संख्या	आर–मूल्य	पी – मूल्य	सहसंबंध	सार्थकता का स्तर
संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता	100	0.0069	0.952	नकारात्मक सहसंबंध	सार्थक नहीं

तालिका 5 से सहसंबंध गुणांक 'आर' –0.0069 है, जो संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच बहुत कमजोर नकारात्मक से संबंध को अंकित करता है। नकारात्मक संकेत (–) बताता है कि जैसे – जैसे संगठनात्मक वातावरण घटता है (या कम सकारात्मक होता है), शिक्षक प्रभावशीलता बहुत कम हो जाती है। प्राप्त पी – मूल्य 0.952 है जो काफी अधिक है। यह उच्च पी – मूल्य बताता है कि संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच देखा गया सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। दूसरे शब्दों में, इस बात की बहुत अधिक संभावना है कि यह देखा गया संबंध यादृच्छिक संयोग के कारण घटित हो सकता है। इसकी व्याख्या यह की जाती है कि "नकारात्मक सहसंबंध" है जिसका अर्थ है कि जैसे ही एक चर (संगठनात्मक वातावरण) घटता है, अन्य चर (शिक्षक प्रभावशीलता) भी कम हो जाता है, हालांकि यह संबंध बहुत कमजोर है। इसीलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि संबंध महत्वपूर्ण नहीं है, जो सटीक रूप से दर्शाता है कि उच्च के कारण देखा गया संबंध सांख्यिकी के रूप से सार्थक नहीं है। इसीलिए तैयार की गई शून्य परिकल्पना, शिक्षक प्रभावशीलता और उच्च शिक्षण संस्थानों के संगठनात्मक वातावरण के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है को स्वीकार कर लिया है। "

निष्कर्ष –

इस अध्ययन में उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षक प्रभावशीलता और संगठनात्मक वातावरण के विभिन्न पहलुओं की जांच की गई। विश्लेषण में शिक्षक प्रभावशीलता में लिंग–आधारित अंतर, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षक प्रभावशीलता में असमानताएं, संगठनात्मक वातावरण में लिंग–आधारित भिन्नताएं और संगठनात्मक

वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच संबंध का पता लगाया गया। परिणाम लगातार अशक्त परिकल्पनाओं की स्वीकृति का समर्थन करते हैं, जो अध्ययन किए गए कारकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर या संबंध नहीं दर्शाते हैं। विशेष रूप से, शिक्षक प्रभावशीलता या संगठनात्मक वातावरण के संदर्भ में पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं थे। इसी प्रकार, ग्रामीण और शहरी शिक्षकों के बीच शिक्षक प्रभावशीलता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। हालाँकि, संगठनात्मक वातावरण में एक उल्लेखनीय अंतर सामने आया, शहरी शिक्षकों ने अपने ग्रामीण समकक्षों की तुलना में अधिक अनुकूल वातावरण की सूचना दी। इसके अलावा, संगठनात्मक वातावरण और शिक्षक प्रभावशीलता के बीच एक बहुत कमजोर नकारात्मक सहसंबंध की पहचान की गई थी, लेकिन यह सहसंबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं था। यह इंगित करता है कि जैसे–जैसे काम का माहौल अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है या कम सहायक होता जाता है। शिक्षक भूमिकाओं में अधिक प्रभावी हो जाते हैं, वे अतिरिक्त प्रयास करके अपने सामने आने वाली चुनौतियों की भरपाई करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं और अपने शिक्षण में अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

शैक्षिक निहितार्थ –

इस अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ बहुआयामी हैं और शिक्षा के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्ष, जो शिक्षक प्रभावशीलता या संगठनात्मक वातावरण में कोई महत्वपूर्ण लिंग–आधारित असमानताओं का संकेत नहीं देते हैं, शैक्षिक संदर्भों में लिंग समानता

को बढ़ावा देने के महत्व को रेखांकित करते हैं। इसके लिए समावेशी नीतियों और प्रथाओं के निरंतर विकास की आवश्यकता है जो लिंग की परवाह किए बिना शिक्षकों को सशक्त बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, अध्ययन संगठनात्मक वातावरण में असमानताओं को पाटने और शिक्षकों को बेहतर समर्थन देने के लिए ग्रामीण शैक्षिक सेटिंग्स में लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है। डेटा – संचालित निर्णय लेने पर जोर शैक्षिक नीति और व्यवहार में साक्ष्य–आधारित दृष्टिकोण के महत्व को पुष्ट करता है। इन निहितार्थों को लागू करके, शैक्षणिक संस्थान अधिक न्यायसंगत, सहायक और प्रभावी वातावरण बना सकते हैं जो अंततः शिक्षकों और उनके द्वारा सेवा किए जाने वाले छात्रों दोनों को लाभान्वित करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1 –सुखिया, एस. पी." विद्यालय प्रशासन संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा " प्रकाशकः विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ संख्या – 3 / 7

2 –शर्मा, कुसुम, " विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा " राधा प्रकाशन, मंदिर आगरा, संस्करणः 2009, पृष्ठ संख्या – 24 / 26

3 – मंगल, एस. के. एवं शुभ्रा मंगल " शैक्षिक तकनीकी के मूल तत्व एवं प्रबंधन " प्रकाशकः लायल बुक डिपों, मेरठ, संस्करणः 2007, पृष्ठ संख्या – 344

4 – सिंह, कुमारी प्रीति (2022) " उच्चतर माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का,उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन " IJCRT, ORG वॉल्यूम 10, ISSUE 7, July 2022 ISSN - 2320_2882

5 – कुमार, सुमित (2021) " कुरुक्षेत्र जिले के वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापकों का शिक्षा प्रभावशीलता ज्ञात करना " जनरल ऑफ इमरजेंसी टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसच वॉल्यूम – 8, ISSUE 10, ISSN – 2349–5162

6 – विश्वकर्मा, जागृति एवं कुमार, मौर्य दिनेश (2021) " सरकारी तथा गैर सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि पर अध्ययन "स्कॉलरली रिसर्च जनरल फॉर ह्यूमैनिटी साइंस ऐंड इंग्लिश लैंग्वेज, वॉल्यूम – 9/46, पृष्ठ संख्या – 11296–11301

7 – बलखंडे, दीपा मिलिंद (2020) " संगठनात्मक वातावरण और कार्य प्रेरणा का सहसंबद्ध अभ्यास " इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस रिसर्च ISSN:2455-2070:, Impactor:RJIF-5.22, Volume 6; Issue - 2; Pg.79 - 81